Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 3 | (July - September 2026)

रेणु के रिपोर्ताज में समाजशास्त्रीय यथार्थ : एक अध्ययन

विकास रंजन [1], डॉ. रोशन रवि [2]
[1] शोधार्थी, विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर
[2] विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, के. डी. एस कॉलेज, गोगरी सह सहायक प्राध्यापक, विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर

सारांश

हिन्दी साहित्य की कथेतर गद्य-विधाओं में रिपोर्ताज एक ऐसी सशक्त साहित्यिक विधा है, जिसमें पत्रकारिता की तथ्यपरकता और साहित्य की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का प्रभावी समन्वय दृष्टिगोचर होता है। यह विधा केवल घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक आयामों का भी बहुआयामी विश्लेषण करती है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने हिन्दी रिपोर्ताज को केवल घटनाओं के वृत्तांत के रूप में नहीं, बल्कि जनजीवन की वास्तविक परिस्थितियों, लोक-संस्कृति, सामाजिक विषमता तथा मानवीय संघर्षों की प्रामाणिक अभिव्यक्ति के रूप में विकसित किया। प्रस्तुत शोध-पत्र में रेणु के प्रमुख रिपोर्ताज ऋणजल धनजल, इस जल प्रलय में तथा नेपाली क्रांति कथा के आधार पर उनके रिपोर्ताज-साहित्य में निहित समाजशास्त्रीय यथार्थ का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि रेणु ने प्राकृतिक आपदाओं, वर्गीय विषमता, राजनीतिक संघर्ष, लोकतांत्रिक चेतना, लोक-संस्कृति तथा मानवीय संवेदना को किस प्रकार अपने रिपोर्ताजों के माध्यम से व्यापक सामाजिक संदर्भों से जोड़ा है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि रेणु का रिपोर्ताज-लेखन तटस्थ पत्रकारिता का उदाहरण न होकर प्रत्यक्ष जीवनानुभव, सामाजिक सहभागिता तथा जनपक्षधर दृष्टि पर आधारित साहित्यिक अभिव्यक्ति है। उनके रिपोर्ताजों में समाज केवल घटनाओं की पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि संपूर्ण रचना का सक्रिय केंद्र है, जहाँ सामान्य जन का संघर्ष, सामुदायिक जीवन, सांस्कृतिक चेतना तथा लोकतांत्रिक आकांक्षाएँ एक-दूसरे से अंतर्संबद्ध रूप में अभिव्यक्त होती हैं। समकालीन परिप्रेक्ष्य में, जब पर्यावरणीय संकट, विस्थापन, सामाजिक असमानता तथा जनसरोकारों से जुड़ी पत्रकारिता नई चुनौतियों का सामना कर रही है, तब रेणु का रिपोर्ताज-साहित्य समाजशास्त्रीय अध्ययन, हिन्दी कथेतर गद्य तथा संवेदनात्मक पत्रकारिता तीनों के लिए समान रूप से अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है।

शब्द कुंजी: फणीश्वरनाथ 'रेणु', रिपोर्ताज विधा, समाजशास्त्रीय यथार्थ, वर्गीय अंतर्विरोध, लोक-संस्कृति, राजनीतिक चेतना, स्वानुभूत यथार्थ, भाषिक संरचना।

विश्लेषण:

हिन्दी साहित्य की कथेतर गद्य-विधाओं में रिपोर्ताज एक ऐसी विशिष्ट और संवेद्य साहित्यिक विधा है, जिसमें समाचार पत्रों की सूचनात्मकता, पत्रकारिता की तथ्यपरकता और साहित्य की कलात्मक संवेदना का अत्यंत सशक्त एवं सजग समन्वय दृष्टिगोचर होता है। बीसवीं शताब्दी के मध्य में वैश्विक और भारतीय परिदृश्य पर घटित होने वाली तीव्र राजनीतिक, सामाजिक एवं प्राकृतिक उथल-पुथल ने इस विधा के विकास के लिए उर्वर भूमि तैयार की। रिपोर्ताज घटनाओं का मात्र सतही विवरण या तात्कालिक समाचार प्रस्तुत करने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह घटनाओं के मूल में छिपे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक आयामों का गहन और वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करता है।

इस प्रकार रिपोर्ताज अपने समय के समाज, पीड़ित जनजीवन, शोषित वर्गों और ऐतिहासिक परिस्थितियों का एक अत्यंत प्रामाणिक, जीवंत और संवेदनात्मक साहित्यिक दस्तावेज़ बन जाता है[1]।

साहित्य का समाजशास्त्र साहित्य को समाज का यांत्रिक प्रतिबिंब या केवल काल्पनिक रचना नहीं मानता, बल्कि उसे सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों, वर्गीय संबंधों, आर्थिक विषमताओं तथा मानवीय चेतना की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में देखता है[2]। इस दृष्टि से किसी भी साहित्यिक कृति का मूल्यांकन केवल उसके बाह्य शिल्प या अलंकृत भाषा के आधार पर नहीं, बल्कि इस आधार पर किया जाता है कि वह अपने समय की सामाजिक जटिलताओं, वर्गीय अंतर्विरोधों, प्रशासनिक तंत्र की कमियों तथा परिवर्तनशील जन-परिस्थितियों को कितनी प्रामाणिकता और संवेदनात्मक गहराई के साथ अभिव्यक्त करती है। इसलिए साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर सामाजिक इतिहास, सामूहिक स्मृति, लोक-चेतना तथा जन-आकांक्षाओं के अनुशीलन का भी एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और प्रामाणिक स्रोत माना जाता है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' का रिपोर्ताज-साहित्य समाजशास्त्रीय यथार्थ की इसी प्रगतिशील और लोक-उन्मुख परंपरा का एक अत्यंत सशक्त, मौलिक और कालजयी उदाहरण प्रस्तुत करता है। उन्होंने रिपोर्ताज विधा को केवल समाचारों के तथ्यात्मक संकलन या तटस्थ पत्रकारिता तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे सामाजिक यथार्थ की आलोचनात्मक व्याख्या और जनपक्षधर चेतना का प्रभावी साहित्यिक माध्यम बनाया[3]। उनके रिपोर्ताजों में बाढ़, अकाल, सुखाड़, विस्थापन, राजनीतिक संघर्ष, लोकतांत्रिक आंदोलन तथा ग्रामीण जीवन की बुनियादी समस्याएँ केवल घटनात्मक प्रसंग बनकर नहीं आतीं, बल्कि वे उस संपूर्ण सामाजिक-आर्थिक संरचना का उद्घाटन करती हैं जिसके भीतर सामान्य मनुष्य, भूमिहीन किसान, मजदूर और वंचित समुदाय अपने अस्तित्व, संघर्ष और जीवन-मूल्यों का निर्माण करते हैं। यही कारण है कि उनके यहाँ समाज किसी निष्क्रिय पृष्ठभूमि के रूप में नहीं, बल्कि संपूर्ण रचना का एक सक्रिय, जीवंत और केंद्रीय तत्व बनकर उपस्थित होता है।

हिन्दी रिपोर्ताज के इतिहास में प्राकृतिक आपदा, मानवीय संकट और सामाजिक विभीषिका के जीवंत एवं संवेदनात्मक चित्रण का आरंभिक मानक रांगेय राघव के प्रसिद्ध रिपोर्ताज-संग्रह तूफानों के बीच से निर्मित होता है, जिसमें द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान बंगाल में पड़े भीषण अकाल का सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय परिदृश्य उकेरा गया था[4]। रेणु ने इस परंपरा को और अधिक समृद्ध, आंचलिक और जन-उन्मुख बनाते हुए आपदा को केवल प्रशासनिक विफलता या प्राकृतिक प्रकोप के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे ग्रामीण समाज के वर्गीय ढाँचे, जातीय विषमता और शोषक तंत्र को पूरी नग्नता के साथ उघाड़ने वाले एक माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया। रेणु की रचनात्मक दृष्टि का सबसे महत्त्वपूर्ण और आधारभूत पहलू उनका प्रत्यक्ष जीवनानुभव है। वे किसी दूरस्थ नगर में बैठकर या केवल एक बाहरी पर्यवेक्षक अथवा तटस्थ पत्रकार की भाँति घटनाओं का वर्णन नहीं करते, बल्कि वे स्वयं उन विषम परिस्थितियों के प्रत्यक्ष सहभागी बनकर उन्हें अपने संपूर्ण अस्तित्व से अनुभव करते हैं[5]। इस जल प्रलय में की भूमिका में उनका यह प्रसिद्ध कथनः 'अर्थात् बाढ़ को मैंने भोगा है, शहरी आदमी की हैसियत से।' उनके रिपोर्ताज-साहित्य की अनुभवगत प्रामाणिकता, रचनाधर्मिता और स्वानुभूत यथार्थ का प्रत्यक्ष एवं अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत करता है।

रेणु के रिपोर्ताज-साहित्य में समाजशास्त्रीय यथार्थ का सर्वाधिक सशक्त और मर्मस्पर्शी स्वरूप आर्थिक विषमता, गरीबी और वर्गीय अंतर्विरोधों के यथार्थवादी चित्रण में दिखाई देता है। विशेषतः उनके कालजयी रिपोर्ताज-संग्रह ऋणजल धनजल में बाढ़ केवल पानी के प्रवाह या एक प्राकृतिक आपदा का दृश्य मात्र नहीं रह जाती, बल्कि वह ग्रामीण समाज में मौजूद गहरी आर्थिक असमानता, प्रशासनिक उदासीनता तथा संसाधनों के विषम वितरण को पूरी तरह से

उघाड़ देने वाला एक व्यापक सामाजिक परिदृश्य बन जाती है। रेणु ने अपने सूक्ष्म निरीक्षण से यह स्पष्ट किया है कि प्राकृतिक आपदाएँ समाज के सभी वर्गों को समान रूप से प्रभावित नहीं करतीं; उनका सर्वाधिक भयावह और विनाशकारी दुष्प्रभाव समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े भूमिहीन किसानों, खेतिहर मजदूरों, मुसहरों, मल्लाहों तथा अन्य वंचित समुदायों पर ही पड़ता है। इन वर्गों के लिए बाढ़ केवल कुछ दिनों का शारीरिक कष्ट या अस्थायी संकट नहीं, बल्कि उनके पूरे जीवन, आवास, रोज़गार और अस्तित्व का विनाशकारी प्रश्न बन जाती है। ऋणजल धनजल में बाढ़ और भुखमरी से त्रस्त मुसहर टोली के एक पीड़ित पात्र की यह करुण और मर्मांतक पुकारः तीन-तीन दिन पर हमन कै एकगो रोटी न मिले। यह केवल किसी एक व्यक्ति की व्यथा या भुखमरी का वर्णन नहीं है, बल्कि उस संपूर्ण औपनिवेशिक व स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की असफलता को नग्न रूप में रेखांकित करता है, जिसमें किसी भी राष्ट्रीय या प्राकृतिक संकट की सबसे भारी कीमत हमेशा गरीब और शोषित वर्ग को ही चुकानी पड़ती है।

रेणु के संपूर्ण कथेतर गद्य का गहन समाजशास्त्रीय अनुशीलन यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वे बाढ़ और सूखा दोनों ही स्थितियों को एक ही शोषक सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के दो पहलू मानते हैं[6]। जहाँ 'ऋणजल' अकाल, सुखाड़, फसल की बर्बादी तथा किसान की निरंतर गहराती कर्जग्रस्त स्थिति और महाजनी शोषण को दिखाता है, वहीं 'धनजल' बाढ़ के विनाशकारी रूप और जनजीवन की तबाही को रेखांकित करता है। राहत वितरण की प्रशासनिक अव्यवस्था, राहत सामग्रियों की चोरी, प्रभावशाली एवं उच्च वर्गों का वर्चस्व तथा प्रशासनिक तंत्र की अकर्मण्यता उनके रिपोर्ताजों में बार-बार ऐसे उजागर होते हैं, जो प्राकृतिक आपदा की विभीषिका को कई गुना अधिक बढ़ा देते हैं। रेणु यह दिखाते हैं कि किस प्रकार संकट के समय भी समाज का शोषक वर्ग अपनी तिजोरियाँ भरने और संसाधनों पर अपना एकाधिकार जमाने की ताक में रहता है। इस प्रकार रेणु के लेखन में बाढ़ केवल एक पर्यावरणीय या प्राकृतिक संकट नहीं रहती, बल्कि वह सामाजिक न्याय, प्रशासनिक उत्तरदायित्व, मानवीय मूल्यों और वर्गीय संबंधों की एक कठिन परीक्षा का माध्यम बन जाती है।

रेणु के रिपोर्ताज-साहित्य का एक अन्य अत्यधिक महत्त्वपूर्ण और विचारोत्तेजक आयाम उनकी प्रखर राजनीतिक चेतना और लोकतांत्रिक संघर्षों का यथार्थवादी चित्रण है। रेणु के लिए राजनीति केवल चुनाव जीतने, सत्ता-परिवर्तन करने अथवा शासन-व्यवस्था के औपचारिक ढाँचे तक सीमित कोई बंद कमरा नहीं है, बल्कि वह सामान्य जनता के बुनियादी अधिकारों, सामाजिक समानता, मानवीय गरिमा और लोकतांत्रिक आकांक्षाओं से जुड़ी एक व्यापक और जीवंत सामाजिक प्रक्रिया है। इस दृष्टि से उनका सुप्रसिद्ध ग्रंथ नेपाली क्रांति कथा उनकी राजनीतिक परिपक्वता, जनपक्षधरता और अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी संवेदना का एक अत्यंत प्रामाणिक और ऐतिहासिक दस्तावेज़ है[7]। इस महान कृति में उन्होंने पड़ोसी देश नेपाल के राणाशाही-विरोधी ऐतिहासिक आंदोलन का चित्रण केवल एक बाहरी इतिहासकार या पत्रकार की भाँति नहीं किया, बल्कि उसे स्वतंत्रता, सामाजिक समानता, निरंकुशता के अंत और लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए आम जनता के सामूहिक और सशस्त्र संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया है। नेपाली क्रांति कथा में वे लिखते हैं 'क्रांति सिर्फ काठमांडू के महलों को हिलाने के लिए नहीं थी, यह विराटनगर के जूट मिल मज़दूरों और सीमा पर पहरा देते उस आम इंसान की आँखों का सपना था, जो बंधनों को तोड़कर आज़ाद हवा में साँस लेना चाहता था।' रेणु का यह प्रखर विचार यह पूरी तरह से स्पष्ट करता है कि उनके लिए क्रांति केवल शोषक वर्ग को हटाकर नए शासक को बैठाने का जरिया नहीं, बल्कि समाज के अंतिम व्यक्ति की मुक्ति, मानवीय गरिमा और सामाजिक न्याय की स्थापना का एक सर्वव्यापी जनआंदोलन है।

हिन्दी में राजनीतिक यथार्थ, युद्ध-विभीषिका और अंतरराष्ट्रीय जनआंदोलनों पर लिखे गए अन्य प्रमुख रिपोर्ताजों (जैसे धर्मवीर भारती का प्रसिद्ध रिपोर्ताज युद्ध यात्रा, जो 1971 के बांग्लादेश मुक्ति-संग्राम के भयावह यथार्थ और जन-संघर्ष पर आधारित है) की भाँति रेणु की नेपाली क्रांति कथा भी रिपोर्ताज विधा की राजनीतिक, सामाजिक और संवेदनात्मक क्षमताओं को अभूतपूर्व विस्तार देती है। रेणु ने नेपाल के इस राणाशाही-विरोधी आंदोलन में केवल एक दर्शक या रिपोर्टर के रूप में भाग नहीं लिया था, बल्कि वे स्वयं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और सोशलिस्ट आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि से लैस होकर नेपाली मुक्ति-सेना के साथ अग्रिम मोर्चे पर तथा सीमावर्ती क्षेत्रों में सक्रिय रूप से मौजूद रहे थे। यही कारण है कि उनके विवरणों में राजनीतिक रणनीतियों के विश्लेषण के साथ-साथ आम नेपाली जनता, मजदूरों और सैनिकों की मानसिक स्थिति, उनकी उम्मीदों और उनकी अदम्य जिजीविषा का अत्यंत यथार्थवादी और संवेद्य चित्रण एक साथ देखने को मिलता है[8]।

रेणु के रिपोर्ताजों की एक सबसे बड़ी और अनूठी विशेषता यह है कि उनमें लोकजीवन, लोक-मानस और आंचलिक संस्कृति को समाजशास्त्रीय यथार्थ के एक अनिवार्य और अभिन्न अंग के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। रेणु की दृष्टि में लोक-संस्कृति कोई अतीत की भूली-भटकी स्मृति, केवल नृवैज्ञानिक अध्ययन का विषय या किसी संग्रहालय में सजाकर रखने की वस्तु नहीं है, बल्कि वह ग्रामीण समाज की अत्यंत जीवंत, सक्रिय और निरंतर प्रवहमान सांस्कृतिक चेतना है। यही लोक-संस्कृति सबसे भयंकर संकटों, प्राकृतिक विभीषिकाओं और आर्थिक अभावों के समय भी जनसामान्य को मानसिक शक्ति, सामुदायिक एकजुटता और जीवन से टकराने का अदम्य साहस प्रदान करती है। यही कारण है कि बाढ़ से डूबे हुए गाँवों, अकाल की विभीषिका से तड़पते अंचलों, विस्थापन के दर्द और घोर अभावों के मध्य भी लोकगीत, लोकनृत्य, कीर्तन, पारंपरिक उत्सव, लोकविश्वास तथा सामुदायिक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ उनके रिपोर्ताजों में निरंतर एक संजीवनी बनकर उपस्थित रहती हैं।

ऋणजल धनजल में जब बाढ़ का पानी चारों तरफ तबाही मचा रहा होता है और मृत्यु का सन्नाटा छाने लगता है, तब भी बाढ़ के पानी से घिरी नावों पर सवार लोगों द्वारा गाए जाने वाले पारंपरिक लोकगीत: 'कासी फूटल कसामल रे दैवा' केवल समय बिताने या मनोरंजन का साधन मात्र नहीं हैं, बल्कि वे सामूहिक पीड़ा, सदियों के दुख, जिजीविषा, आशा और मृत्यु पर जीवन की विजय की एक अद्भुत सांस्कृतिक और सामुदायिक अभिव्यक्ति हैं [9]। रेणु के यहाँ आंचलिकता केवल किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र (जैसे पूर्णिया या उत्तरी बिहार) का बाह्य वर्णन मात्र नहीं है, बल्कि वह वहाँ की माटी, हवा, जल, भाषा, लोक-मुहावरों, जीवन-पद्धति, लोक-विश्वासों और जन-आकांक्षाओं का संपूर्ण समुच्चय है। रेणु ने अपने रिपोर्ताजों में मानक हिन्दी के औपचारिक ढाँचे को तोड़ते हुए उसके साथ मैथिली, अंगिका, भोजपुरी और क्षेत्रीय देशज शब्दों का अत्यंत स्वाभाविक, सजीव और लयात्मक प्रयोग किया है। यह स्थानीय शब्दावली, देशज संबोधन, क्षेत्रीय कहावतें और संवाद पात्रों की प्रामाणिक सामाजिक पहचान, उनके सांस्कृतिक परिवेश और उनकी वर्गीय स्थिति को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से पाठकों के समक्ष उघाड़कर रख देते हैं।

रिपोर्ताज कला में गहरी मानवीय संवेदना, करुणा और आत्मीयता का समावेश ही उसे केवल एक नीरस, शुष्क समाचार या किसी सरकारी विभाग की जाँच रिपोर्ट होने से बचाता है। हिन्दी रिपोर्ताज साहित्य में कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' के प्रसिद्ध रिपोर्ताजों (जैसे उनके संकलन क्षण बोले कण मुसकाए) की भाँति, जिनमें मानवीय मूल्यों, सेवा-भाव और सूक्ष्म संवेदनाओं को प्रमुखता दी गई थी,[10] रेणु ने भी अपने रिपोर्ताज-साहित्य में आम जनमानस के प्रति अगाध करुणा, सहमानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व को अपनी संपूर्ण रचनाशीलता का केंद्र बिंदु बनाया। बाढ़-पीड़ितों, राहत की आस में बैठे असहाय ग्रामीणों, अपनी जान जोखिम में डालकर नाव चलाने वाले मल्लाहों और मुसहर टोली के वंचित लोगों के प्रति उनकी संवेदनशीलता कोई सतही भावुकता या बौद्धिक दया मात्र नहीं है, बल्कि वह एक रचनाकार के

रूप में उनके गहरे सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मिक जुड़ाव की सशक्त अभिव्यक्ति है। ऋणजल धनजल में बाढ़ के दौरान उफनती नदी के बीच नाविकों द्वारा चलाए जाने वाले राहत और बचाव कार्यों का मर्मस्पर्शी चित्रण करते हुए रेणु लिखते हैं: 'कुछ चाहिए? रोटी-पानी?... माझी की आवाज़ इस प्रलयंकारी सन्नाटे में जीवन का संदेश लेकर आती है।' यह चित्रण केवल एक सामान्य राहत कार्य का ब्योरा नहीं है, बल्कि संपूर्ण प्रलय और विनाश के बीच संकटग्रस्त मानव समाज में आपसी मानवीय विश्वास, भ्रातृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व की पुनर्रचना का एक कालजयी प्रतीक बन जाता है।

भारतीय प्रगतिशील साहित्यिक परंपरा के संदर्भ में यदि विचार किया जाए, तो रेणु का रिपोर्ताज-साहित्य बुर्जुआ व्यक्तिवाद, सामंती कुंठा या एकाकी अलगाव की जगह सामूहिक सामाजिक चेतना, लोक-संगठन और जन-एकजुटता को स्थापित करता है।[11] रेणु सामाजिक यथार्थ का चित्रण करते हुए कभी भी घोर निराशावाद, नियतिवाद या पलायनवाद के शिकार नहीं होते। वे विभीषिका और तबाही के विकराल यथार्थ को दिखाते हुए भी उसके भीतर से फूटने वाले सामाजिक बदलाव के बीजों, संघर्ष की चेतना और मनुष्य की अदम्य जीवन-जिजीविषा को निरंतर रेखांकित करते हैं। उनके रिपोर्ताजों में कोई एक विशिष्ट व्यक्ति या अभिजात वर्ग का नायक नहीं है, बल्कि संपूर्ण अंचल, वहाँ का पीड़ित किंतु संघर्षशील जनसमुदाय, मुसहर, किसान, मजदूर और नाविक ही वास्तविक सामूहिक नायक बनकर उभरते हैं।

अंततः, आचार्य रामचंद्र तिवारी के ऐतिहासिक मूल्यांकन के आलोक में यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' का कथेतर गद्य और उनका रिपोर्ताज-लेखन हिन्दी साहित्य की वह अनमोल और कालजयी धरोहर है, जिसने रिपोर्ताज जैसी कथेतर गद्य-विधाओं को शास्त्रीय गरिमा, तथ्यात्मक प्रामाणिकता, आंचलिक सौंदर्य और सामाजिक सरोकार—ये सभी तत्व एक साथ प्रदान किए[12]। रेणु के रिपोर्ताज यह पूरी तरह से प्रमाणित करते हैं कि जब कोई संवेदनशील साहित्यकार समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के बीच स्वयं जाकर यथार्थ को अपनी आँखों से देखता और अपने संपूर्ण अस्तित्व से भोगता है, तब उसकी रचना केवल अपने कालखंड का कोई सामयिक समाचार या रिपोर्ट न रहकर, हमेशा-हमेशा के लिए एक जीवंत, प्रामाणिक और कालजयी समाजशास्त्रीय दस्तावेज़ बन जाती है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत विस्तृत एवं गहन अध्ययन के आधार पर यह पूर्णतः स्पष्ट होता है कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' का रिपोर्ताज-साहित्य हिन्दी कथेतर गद्य-साहित्य की एक कालजयी, युगप्रवर्तक और अद्वितीय उपलब्धि है। उन्होंने रिपोर्ताज विधा को केवल बाह्य घटनाओं के तथ्यात्मक, सूचनात्मक या सतही पत्रकारितापरक विवरणों तक सीमित न रखकर, उसे ग्रामीण सामाजिक संरचना, वर्गीय अंतर्विरोधों, प्रशासनिक तंत्र की जवाबदेही, जनपक्षधर राजनीतिक चेतना तथा लोक-संस्कृति के गहन समाजशास्त्रीय अनुशीलन का एक अत्यंत सशक्त माध्यम बनाया। रांगेय राघव, धर्मवीर भारती तथा कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' जैसे मूर्धन्य साहित्यकारों द्वारा समृद्ध की गई हिन्दी रिपोर्ताज परंपरा में रेणु का ऐतिहासिक योगदान इस मायने में विशिष्ट और अतुलनीय है कि उन्होंने अपने प्रत्यक्ष स्वानुभूत जीवनानुभव, आंचलिक भाषा-शिल्प, लोक-संस्कृति, मानवीय संवेदना तथा शोषित वर्गों के प्रति अडिग पक्षधरता को एक सूत्र में पिरोया। उनके प्रमुख रिपोर्ताज ग्रंथ—ऋणजल धनजल, इस जल प्रलय में तथा नेपाली क्रांति कथा—यह सिद्ध करते हैं कि प्राकृतिक आपदाएँ, अकाल, बाढ़ और राजनीतिक क्रांतियाँ केवल बाह्य या आकस्मिक घटनाएँ नहीं हैं, बल्कि वे समाज के

भीतर गहराई तक व्याप्त संरचनात्मक विषमताओं, वर्गीय शोषण और आम जनता की सुलगती हुई आकांक्षाओं को उजागर करने वाले माध्यम हैं।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में, जब संपूर्ण विश्व और भारतीय समाज पर्यावरणीय संकटों, प्राकृतिक आपदाओं, विस्थापन, बढ़ती सामाजिक-आर्थिक असमानता तथा मीडिया की गिरती साख व तटस्थता जैसे गंभीर प्रश्नों से जूझ रहे हैं, तब रेणु का रिपोर्ताज-साहित्य सत्यनिष्ठा, सामाजिक उत्तरदायित्व, जनपक्षधरता और मानवीय संवेदना का एक अनुकरणीय और प्रेरणादायी मॉडल प्रस्तुत करता है। अतः रेणु का रिपोर्ताज-लेखन न केवल हिन्दी साहित्य की एक स्थायी सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर है, बल्कि वह समाजशास्त्र, जनसंचार, पत्रकारिता और आंचलिक अध्ययन के शोधार्थियों एवं अध्येताओं के लिए एक प्रामाणिक, अनिवार्य और दिशा-दर्शक आधार प्रस्तुत करता है।

सुझाव

- **वंचित वर्ग एवं आपदा-अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में पुनर्मूल्यांकन:** भविष्य के शोध अध्ययनों में रेणु के रिपोर्ताजों का अनुशीलन आधुनिक समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों, विशेष रूप से वंचित वर्ग का अध्ययन, आपदा-प्रबंधन विमर्श, पर्यावरणीय समाजशास्त्र तथा सांस्कृतिक भूगोल के आलोक में विस्तृत रूप से किया जाना चाहिए ।
- **रिपोर्ताज परंपरा का अंतर-विषयक तुलनात्मक अध्ययन:** रेणु के रिपोर्ताजों का तुलनात्मक अध्ययन रांगेय राघव (तूफानों के बीच) तथा धर्मवीर भारती (युद्ध यात्रा) जैसी शीर्षस्थ कृतियों के साथ-साथ विश्व साहित्य के प्रमुख रिपोर्ताजकारों के कृतित्व के साथ किया जाना चाहिए।
- **पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रमों में समावेशन:** विश्वविद्यालयों के जनसंचार, पत्रकारिता तथा मीडिया अध्ययन के पाठ्यक्रमों में रेणु के रिपोर्ताजों को जनपक्षधर, संवेदनात्मक, निष्पक्ष एवं उत्तरदायी फील्ड-रिपोर्टिंग के एक सर्वोत्कृष्ट मॉडल के रूप में अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए ।
- **लोक-सांस्कृतिक प्रलेखन एवं डिजिटल अभिलेखीकरण:** रेणु के रिपोर्ताजों में दर्ज विलुप्त होती आंचलिक शब्दावली, लोकगीतों, मुहावरों तथा लोक-सांस्कृतिक धरोहरों का आधुनिक तकनीक के माध्यम से डिजिटल अभिलेखीकरण और भाषावैज्ञानिक अध्ययन किया जाना चाहिए ।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. राय, गोपाल. (2016). हिन्दी उपन्यास का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. (खण्ड: 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गद्य और रिपोर्ताज विधा', पृ. 250–274).
2. पांडेय, मैनेजर. (1989). साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. (अध्याय: 'साहित्य का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य', पृ. 94–118).
3. श्रीवास्तव, परमानन्द. (1985). फणीश्वरनाथ रेणु. नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी. (अध्याय: 'आंचलिकता और सामाजिक यथार्थ', पृ. 85–108).
4. राघव, रांगेय. (2011). तूफानों के बीच. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. (बंगाल के अकाल पर आधारित ऐतिहासिक रिपोर्ताज, पृ. 25–45).
5. रेणु, फणीश्वरनाथ. (2015). "इस जल प्रलय में." ऋणजल धनजल, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. (पृ. 65–82).

E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 3 | (July - September 2026)

6. यायावर, भारत (सं.). (2007). रेणु रचनावली (खण्ड 4: कथेतर गद्य). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. (रिपोर्ताज खण्ड, पृ. 112–145).
7. रेणु, फणीश्वरनाथ. (1977). नेपाली क्रांति कथा. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. (प्रथम संस्करण, पृ. 15–38).
8. भारती, धर्मवीर. (2008). युद्ध यात्रा. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ. (बांग्लादेश मुक्ति-संग्राम पर आधारित रिपोर्ताज, पृ. 30–52).
9. सिंह, नामवर. (2016). कहानी : नयी कहानी. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन. (मूल निबंध: 'आंचलिक कहानियों और गद्य का दौर', पृ. 72–95).
10. गुप्ता, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'. (2012). क्षण बोले कण मुसकाए. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट. (मानवीय संवेदना पर आधारित रिपोर्ताज संकलन, पृ. 40–60).
11. शर्मा, रामविलास. (1995). प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. (अध्याय: 'प्रगतिशीलता और यथार्थवाद', पृ. 102–125).
12. तिवारी, रामचंद्र. (2014). हिन्दी का गद्य-साहित्य. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन. (खण्ड: 'रिपोर्ताज और रेणु का कथेतर गद्य', पृ. 410–428).